21वीं सदी में महिला सुरक्षा

समस्या एवं चुनौतियाँ

डॉ. नीशू कुमार

डॉ. नीतू गुप्ता

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner

© डॉ. नीशू कुमार
डॉ. नीतू गुप्ता

प्रथम प्रकाशन–2018

सर्वाधिकार लेखक तथा प्रकाशक के अधीन
सुरक्षित हैं।

इस पुस्तक में व्यक्त विचार लेखकों के व्यक्तिगत हैं। इस पुस्तक में व्यक्त विचारों से किसी भी प्रकार की होने वाली हानि के लिए शब्द संयोजक, मुद्रक तथा प्रकाशन का कोई भी दायित्व नहीं होगा।

प्रकाशक

AARTI PRAKASHAN

4561/16 Ansari Road Daryaganj,
New Delhi-110002
Mob: 9811068537, 9958384215
email : surendrapublication@gmail.com

ISBN : 978-93-82185-27-7

मुद्रक

ग्लोबल प्रिंटिंग सर्विसेज,
दिल्ली–110092

Scanned with OKEN Scanner

17

भारत में नारी की स्थितिः सशक्तिकरण एवं चुनौतियाँ

डॉ0 हेमा देवी (प्रवक्ता)

राजनीति विज्ञान विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महविद्यालय

काण्डा (बागेश्वर)

भारतीय समाज में नारियों की स्थिति तथा उससे जुड़े हुए प्रश्नों का वर्णन करने से पहले इतिहास के कुछ पृष्ठों पर नारियों की क्या स्थिति रही होगी, उसका वर्णन करना अनिवार्य होगा। सामाजिक जीवन कभी भी देश, काल के प्रभाव से अछूता नहीं रह सकता है। प्राचीन भारतीय समाज में नारियों को बहुत उच्च स्थान प्रदान किया जाता था। ऐसी मान्यताओं को यथार्थ की कसौटी में कसने की अति आवश्यकता है। यदि हम यह स्वीकार कर लें कि प्राचीन युग में नारियों की स्थिति बहुत श्रेष्ठ थी तथा उनका स्थान ऊँचा था, तो उनकी उच्चता के प्रेरक तत्व कौन–कौन से थे, और उनका ह्रास कब हुआ। यह समझने के लिए इतिहास पर दृष्टि डालना अनिवार्य है।

भारतीय समाज व्यवस्था के इतिहास में महिलाओं की स्थिति एक लम्बे समय से विवाद का विषय रही है। महिलाओं की स्थिति से सम्बन्धित कारण यह नहीं है कि हम जैवकीय अथवा मानसिक रूप से उन्हें दोषपूर्ण मानते हैं, बल्कि इसका मुख्य कारण हमारी पवित्रता सम्बन्धी सकीर्ण विचारधारा ही है। अनेक पश्चिमी विद्वानों ने महिलाओ के विषय में यह माना कि महिला जन्म से ही समान नहीं रही है, जिसके कारण वह पुरुषों के साथ समानता का दावा नहीं कर सकती है। हमारी